काव्य खंड

01

पद *(सूरदास)*

पदों का भावार्थ

पहला पद

ऊधौ ..... पागी।।

भावार्थ गोपियाँ व्यंग्य करते हुए उद्धव से कहती हैं कि हे उद्धव! तुम बहुत भाग्यवान हो, जो अभी तक श्रीकृष्ण के साथ रहते हुए भी उनके प्रेम के बंधन से अछूते हो और न ही तुम्हारे मन में श्रीकृष्ण के प्रति प्रेमभाव उत्पन्न हुआ है। गोपियाँ उद्धव की तुलना कमल के पत्तों व तेल के गागर से करते हुए कहती हैं कि जिस प्रकार कमल के पत्ते हमेशा जल में ही रहते हैं, लेकिन उन पर जल के कारण कोई दाग दिखाई नहीं देता अर्थात् वे जल के प्रभाव से निर्लिप्त होते हैं। इसके अतिरिक्त जिस प्रकार तेल से भरी हुई मटकी पानी के मध्य में रहने पर भी उसमें रखा हुआ तेल पानी के प्रभाव से अप्रभावित रहता है, उसी प्रकार श्रीकृष्ण के साथ रहने पर भी तुम्हारे ऊपर उनके प्रेम तत्त्व का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। आगे वे कहती हैं कि तुमने प्रेम रूपी नदी में कभी पाँव नहीं डुबोया है और न ही तुम्हारी दृष्टि कृष्ण के रूप-सौंदर्य पर मुग्ध हुई, लेकिन हे उद्धव! हम तो भोली-भाली अबलाएँ हैं, हमें तो तुम्हारी तरह कोई ज्ञान नहीं है। जिस प्रकार चींटियाँ गुड़ से चिपक जाती हैं, ठीक उसी प्रकार हम भी श्रीकृष्ण के प्रेम मे उलझ (लिपट) गई हैं।

दूसरा पद

मन ..... लही।

भावार्थ गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि हमारे मन की अभिलाषाएँ हमारे मन में ही रह गईं, क्योंकि हम श्रीकृष्ण से यह कह नहीं पाईं कि हम उनसे प्रेम करती हैं। हे उद्धव! अब तुम ही बताओ हम अपनी यह व्यथा किसे जाकर कहें? अब तक उनके आने की आशा ही हमारे जीने का आधार थी। उसी आशा के आधार पर हमने अपने तन-मन के दु:खों को सहन किया था। अब उनके द्वारा भेजे गए जोग अर्थात् योग के संदेश को सुनकर हम विरह की ज्वाला में जल रही हैं। हम जहाँ से भी श्रीकृष्ण के विरह की ज्वाला से अपनी रक्षा करने के लिए सहारा चाह रही थीं, उधर से ही योग की धारा बहती चली आ रही है। सूरदास गोपियों के माध्यम से कह रहे हैं—अब जब श्रीकृष्ण ने ही सभी मर्यादाओं का त्याग कर दिया, तो भला हम धैर्य धारण कैसे कर सकती हैं?

तीसरा पद

हमारैं ..... चकरी।।

भावार्थ गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि हमारे श्रीकृष्ण तो हमारे लिए हारिल पक्षी की लकड़ी के समान हैं। जिस प्रकार हारिल पक्षी अपने पैरों में दबाई लकड़ी को नहीं छोड़ता, उसी प्रकार हमने भी मन, वचन और कर्म से श्रीकृष्ण को दृढ़तापूर्वक अपने हृदय में बसाया हुआ है। हम तो जागते-सोते, सपने में और दिन-रात कान्हा-कान्हा रटती रहती हैं। हमें तो जोग का नाम सुनते ही ऐसा लगता है, जैसे मुँह में कड़वी ककड़ी चली गई हो। योग रूपी जिस बीमारी को तुम हमारे लिए लाए हो, उसे हमने न तो पहले कभी देखा है, न उसके बारे में सुना है और न ही इसका कभी व्यवहार करके देखा है। सूरदास गोपियों के माध्यम से कहते हैं कि इस जोग को तो तुम उन्हीं को जाकर सौंप दो, जिनका मन चकरी के समान चंचल है। हमारा मन तो स्थिर है, वह तो सदैव श्रीकृष्ण के प्रेम में ही रमा रहता है।

चौथा पद

हरि ..... सताए।।

भावार्थ गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि हम तुम्हारी बातें सुनकर ही श्रीकृष्ण के मंतव्य को समझ गई थीं। गोपियाँ व्यंग्यपूर्वक उद्धव से कहती हैं कि श्रीकृष्ण पहले से ही बहुत चतुर चालाक थे, अब मथुरा पहुँचकर शायद उन्होंने राजनीति शास्त्र भी पढ़

लिया है, जिससे वे और अधिक बुद्धिमान हो गए हैं, जो उन्होंने तुम्हारे द्वारा जोग (योग) का संदेश भेजा है। हे उद्धव! पहले के लोग बहुत भले थे, जो दूसरों की भलाई करने के लिए दौड़े चले आते थे। अब श्रीकृष्ण बदल गए हैं। गोपियाँ कहती हैं कि वे मथुरा जाते समय हमारा मन अपने साथ ले गए थे, अब हमें वो वापस चाहिए।

वे तो दूसरों को अन्याय से बचाते हैं, फिर हमारे लिए योग का संदेश भेजकर हम पर अन्याय क्यों कर रहे हैं? सूरदास के शब्दों में गोपियाँ कहती हैं कि हे उद्धव! राजधर्म तो यही कहता है कि प्रजा के साथ अन्याय नहीं करना चाहिए और न ही सताना चाहिए। इसलिए कृष्ण को योग का संदेश वापस लेकर स्वयं दर्शन के लिए आना चाहिए।

पद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. ऊधौ, तुम हौ अति बड़भागी।
अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी।
पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी।
ज्यौं जल माहँ तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी।
प्रीति-नदी मैं पाउँ न बोरयौ, दृष्टि न रूप परागी।
'सूरदास' अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पागी।।

(क) काव्यांश में बड़भागी किसे कहा गया है?
(i) उद्धव को (ii) गोपियों को
(iii) कृष्ण को (iv) इनमें से कोई नहीं

(ख) गोपियाँ कृष्ण के प्रेम में किस प्रकार डूबी रहती हैं?
(i) जैसे चींटियाँ गुड़ से चिपक जाती हैं
(ii) पत्तों की भाँति
(iii) अनुभूति की भाँति
(iv) उपरोक्त में से कोई नहीं

(ग) 'अपरस रहत सनेह तगा तैं' पंक्ति से क्या आशय है?
(i) भौंरे की तरह फूलों का रस पीते हो
(ii) तुम्हारे मन में प्रेम नहीं है
(iii) प्रेम के बंधन से अछूते हो
(iv) उपरोक्त में से कोई नहीं

(घ) 'प्रीति-नदी' से गोपियों का क्या आशय है?
(i) यमुना नदी (ii) प्रेम नदी
(iii) 'i' और 'ii' दोनों (iv) इनमें से कोई नहीं

(ङ) गोपियों ने उद्धव की तुलना किससे की है?
(i) कमल के पत्तों से (ii) तेल के गागर से
(iii) 'i' और 'ii' दोनों (iv) गुड़ के समान

2. मन की मन ही माँझ रही।
कहिए जाइ कौन पै ऊधौ, नाहीं परत कही।
अवधि अधार आस आवन की, तन मन बिथा सही।
अब इन जोग सँदेसनि सुनि-सुनि, बिरहिनि बिरह दही।
चाहति हुतीं गुहारि जितहिं तैं, उत तैं धार बही।
'सूरदास' अब धीर धरहिं क्यौं, मरजादा न लही।

(क) काव्यांश के आधार पर बताइए कि किनकी अभिलाषाएँ मन में ही रह गईं?
(i) गोपियों की (ii) कृष्ण की
(iii) उद्धव की (iv) कवि की

(ख) गोपियों ने अपने जीने का आधार किसे माना?
(i) कृष्ण के आने की आशा
(ii) कृष्ण का योग संदेश
(iii) मन की अभिलाषा
(iv) उपरोक्त में से कोई नहीं

(ग) गोपियों द्वारा विरह की ज्वाला में जलने का क्या कारण था?
(i) कृष्ण के योग का संदेश
(ii) उद्धव का संदेश
(iii) कृष्ण का चले जाना
(iv) उपरोक्त में से कोई नहीं

(घ) काव्यांश के आधार पर बताइए कि किसने सभी मर्यादाओं का त्याग कर दिया है?
(i) उद्धव ने (ii) श्रीकृष्ण ने
(iii) गोपियों ने (iv) ये सभी

(ङ) प्रस्तुत काव्यांश में सूरदास किसके माध्यम से अपनी बात कह रहे हैं?
(i) उद्धव के (ii) गोपियों के
(iii) कृष्ण के (iv) इनमें से कोई नहीं

3. हमारैं हरि हारिल की लकरी।
मन क्रम बचन नंद-नंदन उर, यह दृढ़ करि पकरी।
जागत सोवत स्वप्न दिवस-निसि, कान्ह-कान्ह जकरी।
सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यौं करुई ककरी।

सु तौ ब्याधि हमकौं लै आए, देखी सुनी न करी।
यह तौ 'सूर' तिनहिं लै सौंपौ, जिनके मन चकरी।

(क) गोपियों ने अपनी तुलना हारिल के पक्षी से क्यों की है?
(i) हारिल पक्षी सदैव लकड़ी लिए उड़ता है
(ii) गोपियों को हारिल पक्षी पसंद है
(iii) श्रीकृष्ण के प्रति अपने एकनिष्ठ प्रेम के कारण
(iv) श्रीकृष्ण के प्रति अपनी नाराज़गी के कारण

(ख) 'नंद-नंदन' विशेषण किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?
(i) श्रीकृष्ण के लिए (ii) गोपियों के लिए
(iii) उद्धव के लिए (iv) नंद के लिए

(ग) गोपियाँ किसे व्याधि कह रही हैं?
(i) उद्धव की बातों को
(ii) उद्धव के योग ज्ञान को
(iii) श्रीकृष्ण के विरह को
(iv) श्रीकृष्ण के प्रेम को

(घ) गोपियों को योग-साधना कैसी लगती है?
(i) हारिल की लकड़ी की तरह
(ii) हारिल पक्षी के समान
(iii) जिसे कभी न देखा हो
(iv) कड़वी ककड़ी के समान

(ङ) गोपियाँ योग का संदेश किनके लिए उपयुक्त समझती हैं?
(i) जो श्रीकृष्ण से प्रेम नहीं करते
(ii) जिनका मन स्थिर नहीं है
(iii) जिनका मन स्थिर है
(iv) श्रीकृष्ण के लिए

4. हरि हैं राजनीति पढ़ि आए।
समुझी बात कहत मधुकर के, समाचार सब पाए।
इक अति चतुर हुते पहिलैं ही, अब गुरु ग्रंथ पढ़ाए।
बढ़ी बुद्धि जानी जो उनकी, जोग-सँदेस पठाए।
ऊधौ भले लोग आगे के, पर हित डोलत धाए।
अब अपनै मन फेर पाइहैं, चलत जो हुते चुराए।
ते क्यौं अनीति करैं आपुन, जे और अनीति छुड़ाए।
राज धरम तौ यहै 'सूर', जो प्रजा न जाहिं सताए।।
(CBSE 2020, Modified)

(क) गोपियों के अनुसार राजनीति कौन पढ़ आए हैं?
(i) उद्धव
(ii) श्रीकृष्ण
(iii) ब्रज के लोग
(iv) मथुरा के लोग

(ख) गोपियों के अनुसार पहले के लोग भले क्यों थे?
(i) वे परोपकारी थे
(ii) उनमें संवेदना थी
(iii) उन्हें योग-संदेश से मतलब नहीं था
(iv) उनसे किसी को कष्ट नहीं था

(ग) सच्चा राजधर्म क्या है?
(i) प्रजा के साथ अन्याय करना
(ii) प्रजा को सताया न जाना
(iii) प्रजा के हित का ध्यान रखना
(iv) प्रजा की रक्षा न करना

(घ) 'गुरु ग्रंथ' किसने पढ़ लिया है?
(i) उद्धव ने (ii) गोपियों ने
(iii) मथुरा के लोगों ने (iv) श्रीकृष्ण ने

(ङ) 'जोग' कैसा शब्द है?
(i) तद्भव (ii) तत्सम
(iii) विदेशी (iv) देशज

अध्याय पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. 'ऊधौ तुम हो अति बड़भागी' पद में किस दृष्टांत से गोपियों ने स्वयं को कृष्ण प्रेम में डूबा हुआ और उद्धव को दुर्भाग्यशाली सिद्ध किया है?
(क) गुड़ से चिपकी हुई चींटी के दृष्टांत से
(ख) जलमग्न तेल से भरी हुई मटकी के दृष्टांत से
(ग) कमल के पत्तों के दृष्टांत से
(घ) उपरोक्त सभी

2. गोपियों ने उद्धव को भाग्यशाली क्यों बताया है?
(क) क्योंकि उद्धव भी गोपियों के समान श्रीकृष्ण से प्रेम करते हैं
(ख) क्योंकि उद्धव श्रीकृष्ण के प्रेम के बंधन से अछूते थे
(ग) क्योंकि उद्धव श्रीकृष्ण के समीप रहते थे
(घ) क्योंकि उद्धव योगी थे

3. 'ऊधौ, तुम हौ' अति बड़भागी पद में गोपियों ने अपने आप को क्या कहा है?
(क) निर्योगी (ख) विरहिणी
(ग) अबला और भोली (घ) प्रेम से विरक्त

4. 'ज्यौं जल माहँ तेल की गागरि' पंक्ति से क्या आशय है?
(क) जिस प्रकार जल में तेल की मटकी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता उसी प्रकार उद्धव पर कृष्ण-प्रेम का कोई प्रभाव नहीं पड़ा
(ख) जिस प्रकार जल में तेल की मटकी डूब जाती है, उसी प्रकार उद्धव कृष्ण-प्रेम में डूबे थे
(ग) जिस प्रकार जल में तेल की मटकी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता उसी प्रकार गोपियों पर कृष्ण-प्रेम का कोई प्रभाव नहीं पड़ा
(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

5. गोपियों ने स्वयं को 'भोरी' क्यों कहा है?
(क) क्योंकि वे अत्यंत मूर्ख थीं
(ख) क्योंकि वे छल-कपट और चतुराई से दूर थीं
(ग) क्योंकि वे उद्धव की बातों में आ गई थीं
(घ) क्योंकि वे किसी का कहना नहीं मानती थीं

6. 'मन की मन ही माँझ रही' गोपियों ने ऐसा क्यों कहा है?
(क) गोपियाँ कृष्ण से मिलकर उन्हें अपने सारे कष्ट बता देना चाहती थीं, लेकिन ऐसा नहीं हुआ
(ख) गोपियाँ उद्धव को अपने मन की बात बताना चाह रही थीं
(ग) गोपियाँ कृष्ण से मिलने मथुरा जाना चाहती थीं, लेकिन वे जा नहीं पाईं
(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

7. गोपियों के जीने का आधार क्या था?
(क) कृष्ण से मिलने मथुरा जाने की आशा
(ख) उद्धव से योग की शिक्षा लेना
(ग) कृष्ण के वृंदावन आने की आशा
(घ) उद्धव द्वारा कृष्ण को अपने प्रेम का संदेश भेजना

8. गोपियाँ विरह की ज्वाला में और अधिक क्यों जल रही हैं?
(क) कृष्ण द्वारा स्वयं वृंदावन न आने के कारण
(ख) कृष्ण के उद्धव के जरिए भेजे गए योग के संदेश को सुनकर
(ग) उद्धव से योग की शिक्षा पाकर
(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

9. 'मरजादा न लही' से क्या आशय है?
(क) श्रीकृष्ण ने अपनी मर्यादाओं को नहीं त्यागा है, लेकिन गोपियों ने त्याग दिया है
(ख) उद्धव अपनी मर्यादा को त्यागकर गोपियों को योग का ज्ञान देना चाह रहे हैं
(ग) गोपियों ने सभी मर्यादाओं का त्याग कर दिया है
(घ) जब श्रीकृष्ण ने ही मर्यादाओं का त्याग कर दिया है, तो वे धैर्य कैसे धारण कर सकती हैं

10. गोपियों ने 'हारिल की लकरी' किसे कहा है?
(क) श्रीकृष्ण को (ख) उद्धव को
(ग) भगवान विष्णु को (घ) स्वयं को

11. गोपियों की इस समय मानसिक स्थिति कैसी है?
(क) वे जागते-सोते, दिन-रात प्रत्येक क्षण श्रीकृष्ण के नाम को रटती रहती हैं
(ख) वे कृष्ण-प्रेम में आतुर होकर आत्महत्या करने को आतुर हैं
(ग) वे उद्धव के योग ज्ञान की शिक्षा लेकर कृष्ण-प्रेम से विमुत्व होना चाहती हैं
(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

12. गोपियों को योग का नाम सुनते ही कैसा लगता है?
(क) मानो उन्हें जीने का आधार मिल गया है
(ख) मानो मुँह में कड़वी ककड़ी चली गई हो
(ग) मानो उनकी सभी विरह-व्यथा नष्ट हो गई हो
(घ) मानो उन्हें स्वर्ग की प्राप्ति हो गई हो

13. कृष्ण की संगति में रहकर भी कौन उनके प्रेम से अछूते रहे?
(क) गोपियाँ (ख) राधा
(ग) उद्धव (घ) बलराम

14. गोपियाँ योग को व्याधि क्यों कह रही हैं?
(क) क्योंकि गोपियाँ योग में पड़कर अपने घरों को नहीं त्यागना चाहतीं
(ख) क्योंकि योग का ज्ञान बहुत कठिन होता है
(ग) क्योंकि उन्होंने न तो इसे पहले कभी देखा-सुना है और न ही कभी व्यवहार करके देखा है
(घ) क्योंकि वे उद्धव के बजाय श्रीकृष्ण से योग सीखना चाहती हैं

15. 'हरि हैं राजनीति पढ़ि आए' पद में राजनीति से कृष्ण की किस नीति की ओर गोपियों ने व्यंग्य किया है?
(क) कृष्ण की वादा करने और उसे पूरा न करने संबंधित नीति
(ख) कृष्ण द्वारा उद्धव को वृंदावन भेजने से संबंधित नीति
(ग) उद्धव द्वारा योग सिखाने की राजनीति से संबंधित नीति
(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

16. गोपियों के अनुसार राजा का क्या धर्म होना चाहिए?
(क) राजा को अपने कानूनों का पालन कराने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ होना चाहिए
(ख) राजा को अपनी प्रजा के सुख-दुःख का ध्यान रखना चाहिए
(ग) राजा को अपनी प्रजा के प्रति सख्त और नियमित होना चाहिए
(घ) राजा अन्याय का विरोध करे और अपनी प्रजा को हर अन्याय से दूर रखे

17. गोपियों के अनुसार पुराने जमाने में लोगों को भला क्यों कहा जाता था?
(क) सीधे सरल होने के कारण
(ख) समभाव रखने के कारण
(ग) दूसरों की भलाई करने के कारण
(घ) स्वार्थी एवं चालाक होने के कारण

18. गोपियों के माध्यम से सूरदास ने क्या साबित किया है?
(क) निर्गुण भक्ति पर कृष्ण-भक्ति को बेहतर साबित किया है
(ख) योग ज्ञान भी आवश्यक है को बताने का प्रयास किया है
(ग) प्रेम की अनन्य महत्ता को सबसे बेहतर साबित किया है
(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

19. गोपियों के अनुसार श्रीकृष्ण ने किस कार्य द्वारा उन पर अन्याय किया?
(क) बिना बताए मथुरा जाकर
(ख) राजधर्म की बातें सुनाकर
(ग) योग का संदेश भिजवाकर
(घ) स्वप्न में दर्शन देकर

उत्तरमाला

पद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. क (i), ख (i), ग (iii), घ (ii), ङ (iii)
2. क (i), ख (i), ग (i), घ (ii), ङ (ii)
3. क (iii), ख (i), ग (ii), घ (iv), ङ (ii)
4. क (ii), ख (i), ग (ii), घ (iv), ङ (ii)

अध्याय पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (घ) *2. (ख)* *3. (ग)* *4. (क)* *5. (ख)* *6. (क)* *7. (ग)* *8. (ख)* *9. (घ)* *10. (क)*
11. (क) *12. (ख)* *13. (ग)* *14. (ग)* *15. (क)* *16. (घ)* *17. (ग)* *18. (क)* *19. (ग)*

व्याख्या सहित उत्तर

4. (क) 'ज्यौं जल माहँ तेल की गागरि' पंक्ति में गोपियाँ उद्धव को उलाहना देती हुई कहती हैं कि जिस प्रकार तेल से भरी हुई मटकी पानी के मध्य में रहने पर भी उस पर पानी का कोई प्रभाव नहीं पड़ता उसी तरह कृष्ण के पास रहते हुए भी उद्धव पर कृष्ण प्रेम का कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

9. (घ) गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि जब श्रीकृष्ण ने ही सभी मर्यादाओं का त्याग कर दिया, तो भला हम धैर्य धारण कैसे कर सकती हैं? अर्थात् जब श्रीकृष्ण ने ही हमारे प्रेम को भुलाकर आपको (उद्धव को) हमें योग सिखाने भेज दिया तो हम धैर्य किस प्रकार धारण करें।